UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 10, अंक : 1, जून 2022

शास्त्रीय और सुगम संगीत की सुवर्ण मध्य बिंदु ग़ज़ल गायकी और उस्ताद मेहदी हसन खाँ

विपुल

शोधार्थी, संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Paper received on : April 19, May 08, May 29, Accepted on June May 30, 2022

सार-संक्षेप

'उस्ताद मेहदी हसन खाँ'–शायद ही कोई ऐसा संगीत प्रेमी होगा जो इस नाम से परिचित होगा। खाँ साहब ने ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, दादरा, गीत, फिल्मी गीत आदि विधाओं का कुशलतापूर्वक गायन किया, लेकिन ग़ज़ल गायकी के क्षेत्र में उनका योगदान अतुलनीय है। सुगम संगीत के अंतर्गत आने वाली ग़ज़ल गायकी को खाँ साहब ने राग रंग का सुंदर लिबास पहना दिया और शास्त्रीय अंगों एवं सौंदर्यात्मक तत्वों का प्रयोग कर, उसे शास्त्रीय गायन के अधिक निकट ले गए। इस लेख का उद्देश्य उनकी शुद्ध शास्त्रीय रंग पर आधारित ग़ज़ल गायकी का विश्लेषण करना है कि किस प्रकार और कहाँ-कहाँ खाँ साहब ने अपनी ग़ज़ल गायकी में शास्त्रीय अंगों का प्रयोग किया है। इस शोध पत्र को प्रस्तुत करने के फलस्वरूप यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि खाँ साहब की गायकी ने सुगम और शास्त्रीय संगीत दोनों का मेल कराने वाली एक कड़ी का कार्य किया है, उनकी गायकी का सिर्फ सुगम संगीत के क्षेत्र में ही नहीं अपितु शास्त्रीय संगीत जगत में भी महत्वपूर्ण स्थान है। खाँ साहब ने एक तरफ सुगम संगीत में शास्त्रीयता का समावेश कर सुगम एवं शास्त्रीय दोनों अंगों का आपस में बखूबी मेल कराया वहीं दूसरी तरफ दोनों ही शैली के कलाकारों, रसिकों एवं श्रोताओं को अपनी गायकी से आकर्षित कर उन्हें अपने संगीत का प्रेमी बना दिया। लिखित सामाग्री कम मिलने के कारण 'यू ट्यूब' पर उपलब्ध खाँ साहब के अनेकों साक्षात्कार, ग़ज़लों की ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग्स और संबंधित अन्य कलाकारों के साक्षात्कार तथा उपलब्ध एक पुस्तक से शोध सामाग्री का संकलन किया गया है। शास्त्रीय और सुगम संगीत की सुवर्ण मध्य बिंदु ग़ज़ल गायकी में उस्ताद मेहदी हसन खाँ की भूमिका अथवा सरल शब्दों में दोनों शैलियों का मेल कराने वाली एक कड़ी के रूप में उस्ताद मेहदी हसन की भूमिका स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : सुगम संगीत, ग़ज़ल गायकी, मेहदी हसन, राग दरबारी, मिया मल्हार

शोध-पत्र

खाँ साहब का जन्म वर्ष 1934 में राजस्थान की जयपुर रियासत में झुंझुनू जिले के अंदर लूना गाँव में हुआ। यह जानकारी यू ट्यूब से प्राप्त की गई है। [1] छः वर्ष की उम्र में राग अडाना में स्वयं रचना करके अपने वालिद उस्ताद अजीम खाँ और चाचा उस्ताद इस्माइल खाँ को सुनाई तो वे आश्चर्यचकित रह गए लिहाजा उसी दिन से खाँ साहब की शास्त्रीय संगीत की तालीम शुरू की गई।''[2]

साक्षात्कार के अनुसार, ''खां साहब कलावंत परिवार से थे और अपने खानदान की 16वीं पुश्त थे। इनके बुजुर्ग राजा महाराजाओं के दरबारी गायक रहे, जो राजा मानसिंह के समय से गाते बजाते चले आ रहे थे।''[3] इसी साक्षात्कार से पता चलता है कि वे ''महाराजा बड़ौदा, महाराजा इंदौर, महाराजा नेपाल, महारानी सिंघाई तथा अन्य छोटी-छोटी रियासतों जैसे मनकापुर, बदलामपुर, बांसी, बस्ती, मैसूर और सी.पी. में छतरपुर, पन्ना, बिजावर स्टेट के महाराजा भी खाँ साहब के बुजुर्गों के शागिर्द थे। इस तरह इन्हीं राजा महाराजाओं में खाँ साहब का बचपन बीता और परवरिश हुई।[4] आठ वर्ष की आयु में इन्होंने अपनी पहली प्रस्तुति महाराजा बड़ौदा के सामने दी जिसमें चालीस मिनट तक राग बसंत पंचम का ख्याल गाया। इसके बाद खाँ साहब को भी दरबारी गायक के रूप में स्वीकार कर लिया गया।[5] खाँ साहब का परिवार भारत-पाक विभाजन के पश्चात् पाकिस्तान स्थानांतरित हो गया।

अपने साक्षात्कार में वे अपनी सांगीतिक शिक्षा के बारे में बताते हैं, ''बुनियाद शास्त्रीय होने के कारण 1950-51 से पहले खाँ साहब ध्रुपद धमार खयाल ही गाते थे, उसके बाद फिर अपनी आवाज के गुण और अपनी पसंद को देखते हुए, उपशास्त्रीय (ठुमरी, दादरा), गीत, फिल्मी गीत, ग़ज़ल की ओर रुख किया।[6] सियासी परिस्थितियों और समय की माँग को देखते हुए भी यह फैसला लेना पड़ा।

''खाँ साहब का स्वभाव था जिस काम में हाथ डालते थे उसे पूरा करके ही छोड़ते थे' जब ग़ज़लों के पीछे पड़े तो उसे बुलंदियों तक

पहुँचाया। इनसे पहले शास्त्रीय रंग में ग़ज़ल नहीं गाई थी, ग़ज़लों की धुनें जरूर बनी थी राग में, लेकिन गायकी में शुद्ध शास्त्रीय रंग नहीं अपनाया गया था।''[7] ''उस्ताद मौजुद्दीन खाँ, बरकत अली खाँ, मुख्तार बेगम, गौहर जान आदि ने ग़ज़ल गायकी को लोकप्रिय किया था, लेकिन इन सबकी गायकी में ग़ज़लें कहीं ना कहीं ठुमरियों जैसी लगने लगती थी, एक कारण यह भी था कि इन गायकों ने ग़ज़लों के लिए भी वही भैरवी, देश, खमाज, तिलक कामोद, पीलू आदि रागों को चुना जो ठुमरियों के लिए परम्परा से उनके अनुकूल माने जाते थे' फिर उनकी गायकी में वैसा कोई प्रयोग नहीं दिखता था, जो बोल में असर पैदा करने के लिए ग़ज़लसराई में जरूरी हो जाता है।''[8]

खाँ साहब बताते हैं कि ग़ज़ल भी अगर गानी है तो अपने अंदाज में, ऐसे रास्ते से निकलना चाहिए जहाँ से और कोई कलाकार ना गुजरा हो। इस तरह ''ग़ज़लों को ग़ज़ल की तरह गाने का अलग सिलसिला मेहदी हसन से शुरू हुआ''[9] इन्होंने ग़ज़ल गायकी को एक नया आयाम दिया और इन्हें शहंशाह-ए-ग़ज़ल एवं बादशाह-ए ग़ज़ल जैसे शीर्षकों से नवाजा गया।

खाँ साहब की गायन शैली की वे विशेषताएँ जो उनकी गायकी को शास्त्रीयता प्रदान करती हैं–

1. **ग़ज़लों में राग के शुद्ध रूप को बरकरार रखना**–''कई बार खाँ साहब की ग़ज़लें रागों की नई बंदिश लगती है''[10] क्यूँकि खाँ साहब ने एक ही राग के बंधन में रहते हुए शास्त्रीय अंग की गायकी से ग़ज़लों को सजाया। राग के शुद्ध स्वरूप के साथ कोई छेड़ छाड़ नहीं की जबकि अन्य समकालीन ग़ज़ल गायकों ने एक आधार राग रखते हुए उसमें कोमल तीव्र सुरों का प्रयोग किया। खाँ साहब का कहना है कि– *''मजा जभी है कि जो स्केल है, जो राग है उसी में गवैया बढ़े, अब इसमें तीव्र कोमल स्वर अगर मैं लगा दूँ, तो मतलब मेरे अंदर मैटेरियल कम है, इन्हीं सुरों को फैलाना है, घण्टे 2 घण्टे आदमी गाए।''*[11] एक अन्य इंटरव्यू में खाँ साहब कहते हैं– *''एक राग में अचानक किसी गैर सुर को लगाया जाए तो कहने वाले यह भी कह सकते हैं कि अच्छा गाते हैं लेकिन गाने में आवारगी है। सुर ऐसे तरीके से लगाया जाए जैसे बुजुर्गों ने वादी-संवादी के नियम और राग के सुरों की तरतीब बताई है, उस तरतीब को मद्दे नजर रखते हुए अगर राग को आलापा जाए या गाया जाए तो राग का जो तास्सुर है लाजमी उसका सुनने वाले पर असर होता है,* खाँ साहब का यह मानना था कि ग़ज़ल राग में रखो और राग को बिगड़ने मत दो ताकि तुम्हारे गाने का असर हो ना हो लेकिन राग का असर तो सुनने वाले पर जरूर होगा!''[12]

खाँ साहब ने कहा है–''हमारी मौसिकी में ज़िन्दगी है, राग रंग कभी पुराना नहीं होता है, आज भी मालकौंस जब शुरू किया जाए तो लगता है कि अभी पैदा हुआ है, उसमें बोरियत नहीं होती है क्यूँकि उसमें खुद ज़िन्दगी है।''[13] ''क्लासिकल के बगैर आगे मौसीकी में रास्ता नहीं है।''[14]

''राग दरबारी में' कू-ब-कू फैल गई बात शनाशाई की', इस ग़ज़ल की प्रस्तुति के दौरान खाँ साहब ने राग दरबारी में कोमल गंधार, और कोमल धैवत के आंदोलन को बहुत ही खूबसूरती से पेश करते हुए राग जौनपुरी और राग आसावरी से उसे अलग करके दिखाया है और तीनों की चाल में अन्तर समझाते हुए ग़ज़ल को पेश किया है।''[15]

इसी तरह राग मियां मल्हार आधारित 'एक बस तू ही नहीं मुझसे खफा हो बैठा' ग़ज़ल की कुछ लाइव प्रस्तुति के दौरान रिकॉर्डिंग में खाँ साहब कह रहे है कि *''मियां की मल्हार के गंधार में आंदोलन भी है और यह अति कोमल है, ना तीव्र है ना कोमल है इनके बीच में है, उसको श्रुतियों से लगाना पड़ता है, यह सुर हारमोनियम, पियानो में नहीं है।''*[16] ग़ज़ल में खाँ साहब ने जिस प्रकार पंचम के साथ अति कोमल गंधार लगाया है वह निशब्द कर देने वाला है।

2:- खाँ सहाब की राग आधारित प्रसिद्ध ग़ज़लें हैं :-

1. चलते हो तो चमन को चलिए, कहते हैं कि बहारा है–राग भैरवी
2. गुलों में रंग भरे बादे नौबहार चले–राग झिंझोटी
3. बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो ना थी–राग पहाड़ी
4. अबके हम बिछड़े तो शायद कभी ख्वाबों में मिले–राग भूपेश्वरी।
5. हमें कोई गम नहीं था, गम ए आशिकी से पहले–राग अहिरी तोड़ी
6. अंजुमन अंजुमन शनाशाई, फिर भी दिल का नसीब तन्हाई–राग यमन
7. शोला था जल बुझा हूँ हवाएँ मुझे ना दो–राग किरवानी
8. खुली जो आँख तो वह था ना वो जमाना था–राग भंखार
9. कैसे छुपाऊं राज-ए-गम–राग पीलू
10. दुनिया किसी के प्यार में जन्नत से कम नहीं–राग भूपाली
11. जिंदगी में तो सभी प्यार किया करते हैं–राग भीमपलासी
12. कोंपले फिर फूट आई–राग मदमात सारंग।
13. कूबकू फैल गई बात शनाशाई की–राग दरबारी कान्हड़ा।
14. फूल ही फूल खिल उठे–राग गौड़ मल्हार
15. मोहब्बत करने वाले कम ना होंगे–राग खमाज
16. रौशन जमाले यार से है अंजुमन तमाम–राग पटदीप।
17. एक बस तू ही नहीं मुझसे खफा हो बैठा–राग मियां मल्हार
18. ये धुआं सा कहाँ से उठता है–राग झिंझोटी
19. रंजिश ही सही दिल ही दुखाने के लिए–राग यमन कल्याण
20. तेरी खुशी से अगर गम में भी खुशी ना हुई–राग मधुवंती
21. ये मौजेजा भी मोहब्बत–राग जोग
22. जब उस जुल्फ की बात चली–राग चारुकेशी

23. बेकरारी सी बेकरारी है–राग कौशिक ध्वनि
24. वो जो हम में तुम में करार था–राग शिवरंजनी।
25. ताजा हवा बहार की–राग जय जयवंती
26. मैं खयाल हूँ किसी और का–राग भैरवी
27. जो चाहते हो सो कहते हो–राग नट भैरव

खां साहब के द्वारा अनेक ऐसे रागों में भी ग़ज़लें गाई गई जिनका प्रयोग ग़ज़ल में पहले नहीं किया गया था। जैसे–राग सेहरा और भूपेश्वरी (भूपश्री, भूपकली)

राग सेहरा में उन्होंने ग़ज़ल गाई है–''जब तेरे नैन मुस्कुराते हैं'' दरअसल ये पाश्चात्य स्केल है जिसको खाँ साहब ने अपने ढंग से ग़ज़ल में प्रयोग किया। खाँ साहब कहते हैं–''इसका नाम नामुमकिन रखा था मैंने, क्यूँकि इसमे 'डिसकौड्र्स हैं सब के सब, ऐसी स्केल का फिल्मों में बैकग्राउंड म्यूजिक में काम आता है' ये सुर फिल्म में वहाँ इस्तेमाल करते हैं जहाँ कोई हादसा, एक्सीडेंट, या डेथ का सीन हो, बुजुर्गों ने इसको रोक दिया कि रूखे हैं ये सुर, इसलिए खाँ साहब ने उनको ढंग में लाने के लिए सुर तो नहीं बदले क्यूँकि सुर बदल देते तो वो राग नहीं रहता लेकिन उसके वादी संवादी से इसमे रचाव पैदा किया कि किस सुर को अधिक बढ़ाया जाए किसको कम किया जाए। इस राग को सेहरा नाम प्रसिद्ध सारंगी वादक उस्ताद सुल्तान खाँ ने दिया था। सेहरा माने वो रेगिस्तान जहा मिलों पानी नहीं है।''[17]

इस राग के सुर हैं–

आरोह–सा रे ग म। ध नी सां।

अवरोह–सां नी ध म। ग रे सा।

राग भूपेश्वरी में 'अबके हम बिछड़े तो शायद कभी ख्वाबों में मिले' यह ग़ज़ल गाई गई है, खाँ साहब बताते हैं कि इसका भी एक किस्सा है, ''रेडियो पाकिस्तान पेशावर से राग भूपाली में कुछ प्रस्तुति देकर खान साहब लौट रहे थे, गाड़ी के झटके से स्वर मंडल का शुद्ध धैवत उतर कर कोमल हो गया, घर पहुँच कर स्वरमंडल छेड़ा तो उसमें कुछ अलग सुर सुनाई दिए, खाँ साहब ने महसूस किया कि उन सुरों में एक अजीब सा समाँ, अजीब सी जुदाई थी, भूपाली में कोमल धैवत से शुद्ध ऋषभ की संगति उन्हें पसंद आई और इस तरह इन सुरों में इस ग़ज़ल को कंपोज किया।''[18]

आरोह–सा रे ग प ध सां

अवरोह–सां ध प ग रे सा

खाँ साहब एक रिकॉर्डिंग में कह रहे हैं–''बहुत बड़े आर्टिस्ट है हिंदुस्तान में मन्ना डे जी, उन्होंने मेरी हौसला अफजाई, इतनी जबरदस्त तरीके से की थी इस ग़ज़ल को, इस स्केल को सुनकर कि मैं बयां नहीं कर सकता। [19]

इसके अतिरिक्त अनेक ऐसी ग़ज़ल हैं जिसमें दो रागों का भी मिश्रण है जैसे–

1. क्या भला मुझको परखने का नतीजा निकला–राग मालकौंस, सोहनी [20]
2. यूँ ना मिल मुझसे खफा हो जैसे–बिलावल और भैरवी[21]
3. खाँ साहब ने अपने गायन में सौंदर्यात्मक तत्वों जैसे कण, मींड, गमक, मुर्की, जमजमा, बहलावे, इत्यादि का बखूबी प्रयोग किया। गायन के मध्य इन तत्वों को समझाते हुए पृथक करके भी दिखाते थे कि देखो ये बहलावा मैं ले रहा हूँ, ये ज़मज़मा है, गमक ऐसी होती है, यह मींड है आदि।
4. ख्याल गायकी की भाँति राग में बंधकर कर ग़ज़ल के बोलों की बढ़त करना यह खाँ साहब की ग़ज़ल गायकी की मुख्य विशेषता रही है। जिस तरह से खाँ साहब ग़ज़ल का विस्तार करते हैं, कभी कभी ऐसा प्रतीत होता है मानो विलंबित खयाल गायकी का आनंद हम ले रहे हैं और खास बात ये है कि किसी भी स्वर समुदाय की पुनरावृति नहीं होती है।
5. खाँ साहब की गायकी सुकून और ठहराव से परिपूर्ण है जिसमें कहीं भी जल्दबाजी नजर नहीं आती दूसरा सच्चे और सटीक सुर का लगाव जो श्रोताओं को भावविभोर कर उनके हृदय की गहराईयों में उतर जाता है। विद्वानों का मानना है कि इतना सुर में किसी को गाते नहीं सुना, श्रुति भी उपर नीचे होते नहीं देखी। ऐसा लगता है मानों आत्मा परमात्मा में मिल गई हो।

स्वर कोकिला लता मंगेशकर जी कहती हैं कि ''मेहदी साहब की आवाज में भगवान बसते हैं।''[22] वहीं मल्लिका ए तरन्नुम नूरजहाँ कहती हैं–''मेहदी हसन साहब के बारे में कुछ कहना सूरज को चिराग दिखाने जैसा है, जो लोग सुर में होते हैं उनके बाबा दादाओं ने, उनकी नस्लों ने मोती दान किए होते हैं, फिर वह इस दुनिया में सुर में आते हैं, मेहदी हसन सुर में इतना भीग कर गाते हैं कि मैं तो समझती हूँ कि ऐसे इंसान कैसे गा सकता है, अभी फिलहाल सौ दो सौ साल तो मेहदी नहीं पैदा होंगे।''[23] ''उस्ताद सलामत अली खाँ ने जब मेहदी साहब की राग दरबारी में ग़ज़ल सुनी तो जिस तरह से मेंहदी साहब ने स्वर का रचाव किया, जैसे सुर लगाए, उसे सुनकर सलामत अली साहब का 6 महीने तक दरबारी गाने को जी नहीं चाहा।''[24]

6. खाँ साहब की आवाज मंद्र सप्तक के सा से तार सप्तक के पंचम तक सरलता से चली जाती है और खरज के 'सा' में भी स्पष्ट और उतनी ही सुरीली सुनाई पड़ती है। ऐसा अनेको रिकॉर्डिंग में सुना जा सकता है।
7. विलंबित लय में तालों का प्रयोग जैसेः-

विलंबित कहरवा में–अबके हम बिछड़े, मेरी तरह सरे महफिल, तेरी खुशी से अगर गम में भी खुशी ना हुई, बहुत बुरा है मगर, बेकरारी सी बेकरारी है–आदि।

विलंबित दादरा में–कैसे छुपाऊ राज-ए-गम, एक बस तू ही नहीं,

कूबकू फैल गई, रंजिश ही सही, मोहब्बत करने वाले कम ना होंगे, शोला था जल बुझा हूँ आदि।

विलंबित रूपक में—वो जरा सी बात पर, कोंपले फिर फूट आई आदि, इक खलिश को हासिल-ए-उम्र-ए-रवाँ रहने दिया आदि।

उपरोक्त सभी विशेषताएँ खाँ साहब की ग़ज़ल गायकी को शास्त्रीयता के निकट ले जाती हैं!

खाँ साहब की ग़ज़ल गायकी में निहित सुगम संगीत की विशेषताएँ :-

1. खाँ साहब ने गायन में मधुरता और कोमलता को बनाए रखा, इन्होंने शास्त्रीय अंगों का प्रयोग जरूर किया लेकिन आवाज का लगाव 'क्लासिकल' वाला नहीं अपितु 'सुगम' वाला रखा। 'क्लासिकल' में खुली एवं जोरदार आवाज लगाई जाती है, किंतु खाँ साहब ने तार सप्तक में भी अपनी आवाज के मुलायमपन को बनाये रखा। मंद्र, मध्य और तार सप्तक, तीनों में एक जैसी गोल आवाज सुनाई पड़ती है। वे ग़ज़ल गायकी के स्वरूप और उसकी की माँग को भली भाँति समझते थे। वे जानते थे कि ग़ज़ल के कोमल बोलों को जोरदार आवाज से गाया जाएगा तो उनका भाव बिगड जाएगा। ''खुद खाँ साहब कहना है की यह बहुत मुश्किल है क्लासिकल गाने वाला सुगम संगीत भी गाए, क्योंकि क्लासिकल, फिल्मी संगीत, और ग़ज़ल सबका अपना अलग क्षेत्र है, ऐसा तभी हो सकता है जब उस तरह का रियाज किया हो, खाँ साहब ने यह खोजा कि अपनी आवाज को किस तरह से तैयार करें, किस किस्म के फामूर्ले इस्तेमाल करें जो आवाज में कहीं रुकावट पैदा ना हो!''[25]
2. सुन्दर साहित्य का प्रयोग, अल्फाजों को पेश करने की अदायगी, शब्दों का उच्चारण सटीक एवं स्पष्ट करना, इसकी तरफ उन्होंने खास तवज्जो दी कि लफ्ज बिगड़ने ना पाए क्योंकि गलत अंदाज से लफ्ज अदा किया जाए तो उसका अर्थ बदल भी जाता है। ''खाँ साहब पहले ग़ज़ल के मतलब को समझते थे फिर मतलब के मुताबिक राग तलाश करते थे, कि किन स्वरों में यह मतलब जाहिर होता है माने किन सुरों में खुशी और किन सुरों में दुख जाहिर होगा इसका ध्यान रखते हुए ग़ज़ल की तर्ज बनाते थे।''[26] ''यही कारण है की भावनात्मक स्तर पर वे अपनी गायकी से श्रोताओं का संबंध स्थापित करने में हमेशा सफल रहते थे।''[27]

वो जरा सी बात पर बरसों के याराने गए, इस ग़ज़ल की लाइव प्रस्तुति के दौरान एक रिकॉर्डिंग में खाँ साहब बताते हैं कि ''किस तरह से ताल के अंदर ग़ज़ल के बोलों को पेश करना चाहिए जिस से उनका का भाव ना बिगड़े बल्की और ज्यादा निखर कर सामने आए। 'मुझसे पहले उस गली में मेरे अफसाने गए' इस मिसरे को गाकर समझाते हैं कि रूपक ताल में इसे 'बीट टू बीट' गाएँगे तो भाव खराब हो जाएगा, उतना अच्छा नहीं लगेगा, इसके लिए कभी कभी 'ऑफ बीट' जाकर भी बोलों को गाया जा सकता है ताकि सौंदर्य बना रहे। खाँ साहब के शब्दों में ''बोल बनाने के लिए भी लय इस्तेमाल होती है, अगर मैं लय के साथ कहूँगा तो बोल बिगड़ेगा।''[28]

शास्त्रीय गायन में राग विस्तार एवं तैयारी पर विशेष बल दिया जाता है, कहीं-कहीं तो साहित्य को भी गौण समझा जाता है, शब्दों के स्पष्ट उच्चारण पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता, किंतु खाँ साहब ने अपनी ग़ज़ल गायकी में शास्त्रीय राग रंग का प्रयोग करते हुए साहित्य पर, तथा शब्द उच्चारण पर विशेष बल दिया जो कि सुगम संगीत के लिए अनिवार्य तत्व है क्योंकि इसे भाव संगीत भी कहा गया है।

3. ''खाँ साहब का मानना था कि गाना, गाना नहीं होना चाहिए उसमें कहन होनी चाहिए, तभी उसमें भाव आएगा, श्रोताओं को आनंद आएगा, इसीलिए उन्होंने कहन को हमेशा तवज्जो दी जिस से आम श्रोता भी उनसे जुड़ जाते थे।''[29] खाँ साहब की विशेषता यह भी थी कि वह मुश्किल अल्फाजों के अर्थ को गायन के मध्य में ही समझा भी दिया करते थे ताकि श्रोता शेर का लुत्फ ले सके।

उदाहरण—

1. शौक-ए-मंजिल तो मेरा आब्ला-पा हो बैठा
2. पहले से मरासिम ना सही फिर भी कभी तो
3. कुछ तो मेरे पिंदार-ए- मोहब्बत का भरम रख
4. अब ना वो मैं हूँ, ना तू है, ना वो माजी है फराज

इन मिसरों को खाँ साहब के द्वारा अपनी प्रस्तुति के मध्य समझाते हुए अनेक रिकॉर्डिंग्स में सुना जा सकता है।

''आबलापा (पाँव के छाले), कुव्वते गुफ्तार (बोलने की शक्ति), मस्लहत (अच्छे बुरे का ज्ञान), कूबकू (गली-गली), शनासाई (जान पहचान) आदि शब्दों से बहुत से श्रोताओं का परिचय खाँ साहब की ग़ज़लों से ही हुआ।'' [30]

4. खाँ साहब ने राग रंग को ज्यादा क्लिष्ट ना कर उसे सरलता से श्रोताओं के समक्ष पेश किया, वे आम श्रोताओं को संगीत के अत्यंत सूक्ष्म तत्वों से भी परिचित कराने की कोशिश करते थे।
5. खाँ साहब ने अनेक ग़ज़लों में विलंबित लय के स्थान पर कहरवा, रूपक, दादरा आदि सुगम तालों की मध्य एवं द्रुत लय का भी प्रयोग किया' जैसे :- रफ्ता रफ्ता वो मेरी हस्ती का सामां हो गए, शिकवा न कर गिला न कर, दुनिया किसी के प्यार में जन्नत से कम नहीं, प्यार भरे दो शर्मीले नैन, मुझे तुम नजर से गिरा तो रहे हो, यू जिंदगी की राह में टकरा गया कोई, खुदा करे कि मोहब्बत में ये मकाम आए आदि।
6. इसके अतिरिक्त अनेक रिकॉर्डिंग्स एवं प्रस्तुतियों में पारंपरिक वाद्य हारमोनियम एवं सारंगी के साथ साथ आधुनिक वाद्य जैसे सिंथेसाइजर, गिटार आदि का भी प्रयोग किया।

उपरोक्त सभी विशेषताओं ने खाँ साहब को अन्य ग़ज़ल गायकों से पृथक कर दिया और उन्हें शीर्ष स्थान पर पहुँचाया।

निष्कर्ष—इस तरह खाँ साहब की गायकी ने सुगम संगीत प्रेमी श्रोताओं और शास्त्रीय संगीत प्रेमी श्रोताओं दोनों को अपनी गायकी से जोड़े रखा है क्यूँकि ''उनकी शास्त्रीयता न तो ग़ज़लों को बोझिल बनाती थी और न ही वे अपनी किसी राग बद्ध ग़ज़ल में राग के चलन को अधूरा छोड़ते थे।''[31]

सुगम संगीत के वे श्रोता जिन्हें शास्त्रीय संगीत का ज्ञान नहीं, निरस लगता है, कठिन लगता है वे जाने अनजाने ही शास्त्रीय गायकी के अंग, रागों, तालों एवं साहित्य आदि को खाँ साहब की ग़ज़लों के माध्यम से ग्रहण कर रहे हैं और सीख रहे हैं। वे इस बात से परिचित भी नहीं हैं कि उनकी पसंदीदा ग़ज़ल 'गुलों में रंग भरे' राग झिंझोटी में, जिंदगी में तो सभी प्यार किया करते हैं राग भीमपलासी पर पूर्ण रूप से आधारित है। इसी तरह अनेकों ग़ज़ल है। खाँ साहब की कोई भी ग़ज़ल ठीक तरह से यदि याद कर लें या तैयार कर लें तो जिस राग पर वह ग़ज़ल आधारित है उस राग का पूरा स्वरूप दिमाग में बैठ जाता है, क्यूँकि खाँ साहब अपनी ग़ज़लों में राग का विशाल महल खड़ा कर देते हैं। इस तरह से बहुत सरल हो जाता है किसी भी राग को सरलता से आत्मसात कर लेना।

वहीं दूसरी तरफ शास्त्रीय संगीत के वे कलाकार एवं श्रोता जो सुगम संगीत को गौण समझते हैं, उसे अधिक महत्व नहीं देते हैं तथा उसकी ओर कम आकर्षित होते हैं, उनको भी सुगम संगीत में शास्त्रीयता का आनंद प्राप्त होता है क्यूँकि जब खाँ साहब ग़ज़ल के बोलों का राग की बढ़त के अनुसार विस्तार करते हैं तो ऐसा लगता है जैसे खयाल गायकी में बोल आलाप किया जाता है। शास्त्रीय संगीत साधक जिस राग में खयाल की बंदिश गाते हैं उसी राग में यदि ग़ज़ल गाना चाहें तो उन्हें राग के शुद्ध स्वरूप में ही खां साहब की ग़ज़ल मिल जाती है।' बड़े-बड़े शास्त्रीय गायकों ने भी उनकी गायकी का लोहा माना।

उपरोक्त सभी कारणों को देखते हुए हम यह यकीनन कह सकते हैं कि मेंहदी साहब की ग़ज़ल गायकी ने सुगम और शास्त्रीय संगीत के मध्य एक कड़ी का कार्य किया है। 'सुगम में शास्त्रीय संगीत की झलक या शास्त्रीय में सुगम संगीत की झलक' दोनों ही बातें कही जा सकती हैं।

''खाँ साहब ने सुगम और शास्त्रीय संगीत दोनों के भिन्न श्रोताओं को भी एक कड़ी से जोड़े रखा है और वह है खां साहब की ग़ज़ल गायकी।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://youtu.be/iUFfB8lqTzE Accessed on – 4 Feb 2022 Title - Mehdi Hasan - Exclusive Interview To Radio Pakistan in 1970.wmv Channel-Pak Broad Cor
2. Ibid
3. https://youtu.be/SC-riTFXfdU Accessed on – 4 Feb 2022 Title - interview Channel - Mehdi Hassan – topic a-3.08 sec
4. https://youtu.be/SC-riTFXfdU Accessed on – 4 Feb 2022 Title - interview Channel - Mehdi Hassan – topic b- 5.43 sec
5. https://youtu.be/SC-riTFXfdU Accessed on – 4 Feb 2022 Title - interview Channel - Mehdi Hassan – topic c- 15.43 sec
6. https://youtu.be/iUFfB8lqTzE Accessed on – 4 Feb 2022 Title - Mehdi Hasan - Exclusive Interview To Radio Pakistan in 1970.wmv Channel - Pak Broad Cor
7. https://youtu.be/iUFfB8lqTzE Accessed on – 4 Feb 2022 Title - Mehdi Hasan - Exclusive Interview To Radio Pakistan in 1970.wmv Channel - Pak Broad Cor
8. अखिलेश झा, मेरे मेंहदी हसन बुक, प्रकाशक–रेमाधव आर्ट प्रा. लि, बी/188, ईस्ट ऑफ कैलास, नई दिल्ली 110065
9. Ibid
10. https://youtu.be/iUFfB8lqTzE Accessed on – 4 Feb 2022 Title - Mehdi Hasan - Exclusive Interview To Radio Pakistan in 1970.wmv Channel - Pak Broad Cor, 11.2 sec
11. https://youtu.be/eqGE-MaEl8I Accessed on – 4 Feb 2022, 8.00 sec
12. https://youtu.be/iUFfB8lqTzE Accessed on – 4 Feb 2022 Title - Mehdi Hasan - Exclusive Interview To Radio Pakistan in 1970.wmv Channel - Pak Broad Cor, 11.2 sec
13. https://youtu.be/0KnCxBvEIxU Accessed on – 4 Feb 2022 Title - Mehdi Hassan Ghazal in raga miya ki malhar, Channel - Nasier Ahmad Sultani, 0.30 sec
14. https://youtu.be/GW0LxMSOlXI Accessed on – 4 Feb 2022, Title - Mehdi Hassan live ku ba ku-1 classical raag darbari, Channel - unsaaris, 0.44 sec
15. https://youtu.be/GW0LxMSOlXI Accessed on – 4 Feb 2022, Title - Mehdi Hassan live ku ba ku-1 classical raag darbari, Channel - unsaaris, 4.11 sec
16. https://youtu.be/0KnCxBvEIxU Accessed on – 4 Feb 2022, Title - Mehdi Hassan Ghazal in raga miya ki malhar, Channel -Nasier Ahmad Sultani, 1.44 sec
17. https://youtu.be/AVqtFf6WqrI Accessed on – 4 Feb 2022, Title - Mehdi hassan ghazals jab tere nain muskurate hain in concert, Channel - Awais Khatti, 0.10 sec
18. https://youtu.be/NpII_SqVEWs Accessed on – 4 Feb 2022, Title - Ab ke hum bichhde- ghazal in a rare raga, Channel - Mehdi Hassan - Topic, 0.10 sec
19. https://youtu.be/Bk9ni8WI5vk Accessed on – 4 Feb 2022, Title - Mehdi Hassan… Abke Hum bichhre (pure gold), Channel - qadrathejutt, 3.20 sec

20. https://youtu.be/xGgDv2Z0R1I Accessed on – 4 Feb 2022, Title - Kya bhala mujhko - mehdi hassan, Channel - mh music archive - ghazal
21. अखिलेश झा, Op.cit, P. 72
22. https://youtu.be/iUFfB8lqTzE Accessed on – 4 Feb 2022 Title - Mehdi Hasan - Exclusive Interview To Radio Pakistan in 1970.wmv Channel - Pak Broad Cor, 3.23 sec
23. https://youtu.be/Sy_TvdHkT6A Accessed on – 4 Feb 2022, Title - Melody Queen madam Noorjehan's tribute to the ghazal legend Mehdi hassan, Channel - PakSingers, 1.02 sec
24. https://youtu.be/BzElVtveHdo Accessed on – 4 Feb 2022, Title - Ustad salamat Ali khan's respect for mehdi hassan sahib, Channel - Irfan Gabol, 3.42 sec
25. https://youtu.be/iUFfB8lqTzE Accessed on – 4 Feb 2022 Title - Mehdi Hasan - Exclusive Interview To Radio Pakistan in 1970.wmv Channel - Pak Broad Cor, 4.51 sec
26. https://youtu.be/iUFfB8lqTzE Accessed on– 4 Feb 2022Title - Mehdi Hasan - Exclusive Interview To Radio Pakistan in 1970.wmv Channel - Pak Broad Cor, 18.40 sec
27. अखिलेश झा, Op.cit, P. 67
28. https://youtu.be/eqGE-MaEl8I Accessed on– 4 Feb 2022, Title - Wo zara si baat par, Channel - Mehdi Hassan - Topic, 10.44 sec
29. अखिलेश झा, Loc.cit, P. 64
30. Ibid, P. 64
31. Ibid, P. 73